MAH

एम.ए. (इतिहास)
प्रथम वर्ष

सत्रीय कार्य
2013–14
एम.ए. इतिहास प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों के लिए
जुलाई 2013 और जनवरी 2014 सत्रों के लिए

एम.एच.आई.-01 : प्राचीन और मध्यकालीन समाज
एम.एच.आई.-02 : आधुनिक विश्व
एम.एच.आई.-04 : भारत में राजनीतिक संरचनाएं
एम.एच.आई.-05 : भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास

इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068

प्रिय विद्यार्थी,

आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम में एक सत्रीय कार्य करना है। सभी सत्रीय कार्य अनिवार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों के उत्तर आप अपने शब्दों में दें। यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रश्न का उत्तर जितने शब्दों में देने के लिए कहा जाए उसका उत्तर लगभग उतने ही शब्दों में दीजिए।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद आप इसे अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास जमा करें। सत्रीय कार्य जमा करने के बाद इसकी पावती अवश्य प्राप्त कर लें और इसे अपने पास संभाल कर रख लें। अच्छा हो कि आप अपने सत्रीयकार्यों के उत्तर की फोटोकॉपी भी अपने पास रख लें।

सत्रीयकार्यों के उत्तर जाँचने के बाद जाँचे गये उत्तर अध्ययन केन्द्र से आपको लौटा दिए जाएँगे। आप इसकी माँग अवश्य करें। अध्ययन केन्द्र आपके द्वारा प्राप्त अंक विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू, दिल्ली को भेज देगा। इसे आपके ग्रेड कार्ड में शामिल कर लिया जाएगा।

सत्रीय कार्य जमा करना

आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्रांत परीक्षा देने से पहले आप सत्रींय कार्य अवश्य जमा करा दें। इसलिए आपको यह सलाह दी जाती है कि आप इसे दी गई अवधि के भीतर पूरा कर लें। एम.ए. प्रथम वर्ष में आपको कुल मिलाकर 4 सत्रीय कार्य करने हैं। सभी सत्रीयकार्यों की जमा करने की अंतिम तारीख में आपको काफी समय दिया गया है लेकिन आपको हम यह सलाह देना चाहते हैं कि आप अपने पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ-साथ इसे बारी बारी से पूरा करते चलें और इसी हिसाब से आप उसे जमा भी करते जाएँ ताकि आपको अंक, परामर्शदाता की टिप्पणी और मूंल्याकित सत्रीय कार्य मिलते रहें। सुनियोजित ढंग से योजना बनाकर आप निर्धारित अवधि के भीतर अपने सारे सत्रीय कार्य पूरे कर सकते हैं। सभी सत्रीयकार्यों को जमा करने के लिए अंतिम तारीख का इंतजार नहीं करें क्योकि एक ही साथ सारे सत्रीयकार्यों को हल करना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा।

सत्र	सत्रीय कार्य जमा करने की तारीख	सत्रीय कार्य जमा करने का स्थान
जुलाई 2013 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	**31 मार्च 2014**	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास
जनवरी 2014 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	**30 सितम्बर 2014**	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास

सवालों का जवाब देने से पहले नीचे दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

सत्रीय कार्य के लिए निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में दो तरह से सवाल पूछे जाएँगे:

१) प्रत्येक विवरणात्मक और निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक निर्धारित होंगे।

२) प्रत्येक लघु श्रेणी प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आपके लिए उत्तर देना आसान होगा:

क) **नियोजन :** सत्रीय कार्यों को ध्यान से पढ़िए। उन इकाइयों को ध्यान से पढ़िए जिनसे ये सवाल पूछे गए हैं। प्रत्येक सवाल का जवाब देने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को अलग से लिख लें और इन्हें तार्किक ढंग से फिर से व्यवस्थित कर लें।

ख) **चयन :** अपने जवाब की रूपरेखा बनाते समय जरूरी बातों का ही उल्लेख करें। उत्तर को विश्लेषणात्मक बनाएँ। निबंधात्मक प्रश्न में प्रस्तावना और निष्कर्ष अवश्य शामिल करें। प्रस्तावना के अन्तर्गत उत्तर के प्रमुख पक्षों को प्रस्तुत करें और यह बताएँ कि आप इस सवाल का जवाब किस तरह से देने जा रहे हैं। अपने उत्तर के उपसंहार में मुख्य बिन्दुओं का सार भी दें।

उत्तर देते वक्त इस बात का ध्यान रखें कि:

- आपका उत्तर तर्कसंगत और सुसंगत हो,
- वाक्यों और अनुच्छेद के बीच स्पष्ट संबंध हो,
- आपकी शैली, अभिव्यक्ति और प्रस्तुति के साथ-साथ आपके उत्तर भी सही हों
- यह चेष्टा करें कि आपके उत्तर शब्द सीमा से अधिक न हों।

ग) **प्रस्तुति :** जब आप संतुष्ट हो जाएँ तो सत्रीय कार्य जमा करने से पहले इसे साफ-साफ लिख लें। जिन बिंदुओं पर आप बल देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित भी कर सकते हैं।

घ) **व्याख्या :** इतिहास लेखन में व्याख्या एक निरंतर प्रक्रिया है। यह आपकी योजना और चयन में पहले ही अभिव्यक्त हो चुका है। "हो सकता है", "संभव है", "हो सकता था", आदि जैसी व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ खुद ब खुद लेखन में व्याख्या के तथ्य शामिल कर लेती हैं। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि इस प्रकार की टिप्पणियों के साथ-साथ आपके उत्तर में इसे पुष्ट करने वाले तथ्य भी शामिल होने चाहिए।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–01
प्राचीन और मध्यकालीन समाज

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–01
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–01/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2013–14
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. पशुपालक खानाबदोशी से आप क्या समझते हैं ? विभिन्न क्षेत्रों में इसके फैलाव का संक्षिप्त विवरण दीजिए। **20**

2. प्रारंभिक सभ्यताओं में तांबे और कांस्य के प्रयोग का विश्लेषण कीजिए। इसके इस्तेमाल के क्या परिणाम हुए। **20**

3. प्राचीन काल में विशाल साम्राज्यों के उदय की प्रक्रिया का उदाहरण सहित विवरण दीजिए। **20**

4. उत्तरी अफ्रीका में राजत्व तथा सरकार की प्रकृति का संक्षिप्त विवरण दीजिए। **20**

5. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**

   क) प्रागैतिहासिक युग के अध्ययन के स्रोत
   ख) दैवीय राजत्व
   ग) क्लासिकी काल में ग्रीस में भूमिपति कुलीन तंत्र और कृषकों का टकराव
   घ) शिकारी संग्रहकर्ता व्यवस्था से कृषि व्यवस्था में रूपांतरण

भाग–ख

6. परवर्ती रोमन साम्राज्य में धर्म का आलोचनात्मक विश्लेषण तथा ईसाई धर्म के उदय पर चर्चा कीजिए। **20**

7. मध्यकाल में भारत में व्यापारी समुदायों तथा उनकी व्यापारिक गतिविधियों का विवरण दीजिए । **20**

8. मध्यकाल में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रमुख विकासों को रेखांकित कीजिए। इन्होंने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया ? **20**

9. मध्ययुगीन यूरोप में जनसांख्यकी के परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी कारकों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। **20**

10. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**

    क) ताओवाद तथा कन्फ्यूशसवाद
    ख) अधिपति (लार्ड) तथा अधीनस्थ (वसाल)
    ग) यूरोप में उत्पादन का संगठन तथा श्रेणियाँ
    घ) सामंतवाद के ह्रास पर अवधारणाएँ

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.-02
आधुनिक विश्व

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–02
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–02/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2013–14
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. यूरोप में सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन में ज्ञानोदय (मदसपहीजमदउमदज) के प्रभाव की व्याख्या कीजिए। **20**

2. कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को परिभाषित कीजिए। जापान द्वारा अपने नागरिकों के कल्याण के लिए उठाए गए कदमों का विश्लेषण कीजिए । **20**

3. उपनिवेशवाद क्या है ? उपनिवेशवाद के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए। **20**

4. विभिन्न प्रकार के प्रवसन (migration) का विवरण दीजिए। प्रवसन ने विश्व इतिहास को किस प्रकार प्रभावित किया **20**

5. **निम्न में सें किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग २५० शब्दों में) संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए :** **10+10**

   क) पुर्नजागरण तथा मानववाद
   ख) राज्य पर गांधीवादी परिपेक्ष
   ग) औद्योगिक समाज की प्रकृति
   घ) शहरीकरण

भाग-ख

6. एकध्रुवीय व्यवस्था पर वाद विवाद की व्याख्या कीजिए। एकध्रुवीय विश्व के समक्ष कौन सी चुनौतियाँ हैं? **20**

7. शीतयुद्ध से क्या समझते हैं? इसने विश्व राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया? **20**

8. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास का विश्लेषण कीजिए। **20**

9. उपभोक्तावाद संबंधी विविध अवधारणाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। **20**

10. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए :** **10+10**

    क) गुटनिरपेक्ष आन्दोलन
    ख) फ्रांसीसी क्रांति की विरासत
    ग) बौलशेविक दल
    घ) मानव जिनोम प्रोजेक्ट (Human Genome Project)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–04
भारत में राजनीतिक संरचनाएं

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–04
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–04/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2013–14
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग ५०० शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. प्रारंभिक काल में उत्तर में पूर्व राज्य से राज्य की ओर संक्रमण की विवेचना कीजिए। **20**

2. राजपूतों के अधीन राज्य व्यवस्था के स्वरूप की व्याख्या कीजिए। **20**

3. मुगल राज्य के विषय में विभिन्न व्याख्याओं की विवेचना कीजिए। **20**

4. रजवाड़ों की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए। औपनिवेशिक राज्य के संदर्भ में इनकी क्या स्थिति थी? **20**

5. दूसरी शताब्दी ई०पू० से तीसरी शताब्दी ई० के दौरान राजनैतिक व्यवस्थाओं के स्वरूप की विवेचना कीजिए। **20**

भाग–ख

6. चोल प्रशासनिक व्यवस्था का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। **20**

7. दिल्ली सल्तनत के अधीन केन्द्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय प्रशासन पर टिप्पणी लिखिए। **20**

8. औपनिवेशिक राज्य द्वारा लागू की गई भू-राजस्व व्यवस्थाओं की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए। **20**

9. अठाहरवीं शताब्दी में अवध में उभरी नई सूबेदारी व्यवस्था की संक्षिप्त विवेचना कीजिए। **20**

10. **निम्न पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**

    क) पंद्रहवीं शताब्दी में मालवा
    ख) प्राचीन भारत में न्याय व्यवस्था

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई.–05
भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.–05
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.–05/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2013–14
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग ५०० षब्दों में) अवष्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग–क

1. औपनिवेशिक इतिहास लेखन की प्रमुख विचारधाराओं की चर्चा कीजिए। औपनिवेशिक विचारधारा की मार्क्सवादी आलोचना प्रदान कीजिए। **20**

2. **300** ई०पू० से **300** ई० के मध्य विदेशी व्यापार की प्रकृति क्या थी ? दक्खन और तमिलकम के व्यापार का पैटर्न किन अर्थों में भिन्न था ? **20**

3. उत्तर-गुप्तकालीन उत्तर भारत में कृषीय उत्पादन में संलग्न ग्रामीण जनसमुदाय किन सामाजिक वर्गो से आते थे ? **20**

4. मध्कालीन अर्थव्यवस्था में पशुपालक और वन्य उत्पादों के महत्व का वर्णन कीजिए। **20**

5. मुगल भारत में कृषकों के सत्ता के प्रति आम विरोध के विभिन्न रूपों की चर्चा कीजिए। **20**

भाग-ख

6. मध्यकाल में व्यवसायिक पद्धतियों के विकास का परीक्षण कीजिए। किस हद तक मध्य काल में व्यवसाय में साझेदारी व्यवस्था सफल सिद्ध हुई ? **20**

7. **19**वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय व्यापार के बदलते स्वरूप का परीक्षण कीजिए। **20**

8. जनजातीय अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक हस्तक्षेपों के प्रभाव क्या थे ? **20**

9. पुर्न-औद्योगीकरण की भारत के परिपेक्ष में व्याख्या कीजिए। १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय लघु उद्योगों के विकास का पैटर्न क्या था ? **20**

10. **निम्न में से किन्हीं दो पर (प्रत्येक लगभग 250 शब्दों में) टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**

    क) कालीमिर्च संबंधी प्लिनी का विवरण
    ख) ***ब्रह्मदेय*** अनुदाय
    ग) ***सर्राफ***
    घ) प्रारम्भिक जनगणना